पर्वत प्रदेश में पावस

सुमित्रानंदन पंत

प्रदत्त कार्य- 1 : कविता पाठ

विषय : छात्रों द्वारा वर्षा ऋतु पर लिखी गई अन्य कविताओं के संग्रह पर आधारित कविता पाठ।

उद्देश्य :

- काव्य विधा के प्रति रुझान।
- विभिन्न ऋतुओं का ज्ञान।
- स्वाध्याय की प्रेरणा।
- श्रवण व वाचन कौशल का विकास।
- प्रकृति का मानव जीवन पर प्रभाव का ज्ञान।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप में दिया जा सकता है।
2. सर्वप्रथम अध्यापक कार्य को समझाएं तथा विद्यार्थियों को उदाहरण देकर बताएं।
3. दो दिन पूर्व छात्रों को कविता का चयन करने का निर्देश दिया जाए। कविता ढूंढने के संदर्भ में छात्रों का मार्गदर्शन भी शिक्षक करें।
4. विद्यार्थियों को कविता संग्रह करने के लिए समय दिया जाए।
5. शिक्षक ध्यान दें कि प्रत्येक छात्र कार्य में रुचि पूर्वक हिस्सा लें। छात्र तथा शिक्षक दोनों मिलकर मूल्यांकन करें।
6. मूल्यांकन के आधार विद्यार्थियों को समझा दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विद्यार्थियों द्वारा संग्रह तथा प्रस्तुतिकरण के आधार पर मूल्यांकन

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य प्रस्तुति के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- संग्रह के तरीके में होने वाली कमी के संदर्भ में सुझाव।
- प्रमुख कवियों तथा उनकी कविताओं के शीर्षक श्याम–पट्ट पर लिखें।
- सर्वश्रेष्ठ संग्रह करने वाले विद्यार्थियों की सराहना।

प्रदत्त कार्य–2 : स्वरचित कविता

विषय : प्रकृति पर आधारित।

उद्देश्य :

- काव्य विधा का ज्ञान व उसके प्रति अभिरुचि जगाना।
- भावुकता व संवेदनशीलता जगाना।
- प्रकृति व मानव के मध्य संबंधों को स्पष्ट करना।
- कल्पनाशीलता व रचनात्मक क्षमता का विकास
- वाचन व लेखन, श्रवण कौशल का विकास।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति व स्वाध्याय का विकास।
- सहभागिता का विकास।

सावन,	बादल,	मेघ,	किरन,	पर्वत,	झमझम,	काले,	पेड़ सूर्य,
शोर,	बिंदु,	मोती,	डाल,	शोर,	बूँद,	आना,	रिमझिम,
हरियाली,	फूल,	कजरारे,	धरती,	कुहासा,	प्यासी,	सरोवर,	पत्तें, नदी

प्रक्रिया :

1. सामूहिक कार्य (6 विद्यार्थियों का एक समूह)
2. सर्वप्रथम अध्यापक ग्रीष्म ऋतु से संबधित कुछ शब्द छात्रों से पूछकर श्यामपट्ट पर लिखें तथा चार पंक्तियां शब्दों के आधार पर बनाकर छात्रों को सुनाएँ।
3. छात्रों को निर्देश दिया जाए कि ऊपर दिए गए चित्र तथा शब्दों की सहायता से स्वरचित कविता लिखने के लिए समूह में चर्चा करें। इसके उपरांत कम से कम 10 पंक्तियों की कविता लिखें। इस कार्य के लिए छात्रों को 25–30 मिनट का समय दिया जाए।

4. काव्य रचना के दौरान शिक्षक निरीक्षण करें तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।

5. कविता लेखन के पश्चात् प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी कविता पाठ करे। इसके लिए प्रत्येक समूह को 2 मिनट का समय दिया जाए। छात्र तथा शिक्षक मिलकर मूल्यांकन करें।

6. समूह के कार्य के आधार पर प्रत्येक छात्र को अंक दिए जाएं।

7. मूल्यांकन के आधार पूर्व में ही श्याम-पट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय व भावानुरूप कविता लेखन
- मौलिकता
- शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना
- क्रमबद्धता, सुसंबद्धता
- उच्चारण की शुद्धता, स्वर की स्पष्टता, आरोह-अवरोह, आत्मविश्वास

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं तथा उपयुक्त अंक दे सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- समूह में सक्रिय योगदान तथा कार्य पूर्ण करने के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ कविता का चयन करें।
- समूह में सक्रिय भूमिका न देने वाले छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
- कविताओं को लघु पत्रिका में स्थान दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 : संस्मरण लेखन

विषय : जब अचानक मुझे गांव जाने का मौका मिला.....

उद्देश्य :

- भारतीय संस्कृति से परिचय।
- आंचलिक परिवेश से परिचय।

- ज्ञान का विस्तार।
- कल्पनाशक्ति का विकास।
- अभिव्यक्ति कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को संस्मरण के बारे में बताया जाएगा।
3. विद्यार्थियों को इस कार्य के लिए 20 मिनट का समय दिया जाएगा।
4. इस दौरान शिक्षक कक्षा में घूम-घूमकर निरीक्षण करेंगे और यथासंभव सहायता करेंगे।
5. मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएंगे।
6. अध्यापक अन्य छात्रों की सहायता से मूल्यांकन करेंगे।
7. विद्यार्थियों की सहायता के लिए शिक्षक द्वारा कुछ संबंधित शब्द दिए जाएंगे। जैसे –

गोधूलि गाय, मिट्टी, झोंपड़ी, पगडंडी, पोखर, खेत, कुम्हार, पेड़, बैल, पाठशाला, पनघट पटरी झूला, कुआँ, मटके, हल, चक्की, ट्रैक्टर, चूल्हा, आँगनबाड़ी

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- विषय वस्तु
- शब्द चयन एवं सटीक वाक्य रचना
- क्रमबद्धता एवं प्रवाहमयता
- उच्चारण की शुद्धता
- आत्मविश्वास (हाव-भाव)

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- उत्कृष्ट अभिव्यक्ति की सराहना की जाए।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाए।
- सामान्य अशुद्धियों को अध्यापक द्वारा शुद्ध किया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : पर्वतीय प्रदेशों की सामान्य जानकारियों पर आधारित कार्य प्रपत्र।

उद्देश्य :

- विभिन्न पर्वतीय स्थलों से परिचय।
- देश के विभिन्न हिस्सों से जोड़ना।
- पर्यटन के प्रति अभिरुचि जगाना।
- ज्ञान का विस्तार।
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास।
- लेखन क्षमता का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक सम्पूर्ण भारत में स्थित पर्वतीय प्रदेशों की सामान्य जानकारी के विषय में कुछ सामान्य जानकारी देते हुए कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित करवाएं।
3. उपरोक्त कार्य प्रपत्र द्वारा या श्याम-पट्ट पर लिखवाकर करवाया जा सकता है। एक अलग पृष्ठ पर यह कार्य करवाया जाए।
4. जब छात्र कार्य करेंगे तब शिक्षक घूम-घूम कर निरीक्षण करेंगे तथा आवश्यकतानुसार छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे।
5. विद्यार्थियों को कार्य-प्रपत्र भरने के लिए 20 मिनट का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- 10 जानकारियां देने पर — 5 अंक
- 8–9 जानकारियां देने पर — 4 अंक
- 6–7 जानकारियां देने पर — 3 अंक
- 4–5 जानकारियां देने पर — 2 अंक
- 2–3 जानकारियां देने पर — 1 अंक

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य पूर्ण करने के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- पूर्ण जानकारी न दे पाने वाले छात्रों का मार्गदर्शन करें ताकि वह कार्य पूर्ण कर सकें।
- कार्य प्रपत्र एकत्रित करने के पश्चात् छात्रों से चर्चा कर पूर्ण जानकारी श्यामपट्ट पर लिख दें।

कार्य प्रपत्र

1. पर्यटन की दृष्टि से प्रसिद्ध तीन पर्वतीय स्थलों के नाम .....
2. पर्वतीय प्रदेशों के प्राकृतिक सौंदर्य से संबंधित दो विशेषताएं .....
3. वृक्षों की विशेषताएं .....
4. दो प्रमुख पशुओं के नाम .....
5. पहाड़ों में बोली जाने वाली दो बोलियों के नाम .....
6. पर्वतीय प्रदेशों के घरों की विशेषताएं .....
7. खेत किस प्रकार के होते हैं? .....
8. पर्वतीय प्रदेशों में पाए जाने वाले प्रमुख फलों के नाम? .....
9. पर्यावरण की विशिष्टता .....
10. पर्वतीय प्रदेशों के लोगों की वेशभूषा (परंपरागत पोशाक) .....

प्रदत्त कार्य-5 : सार लेखन

विषय : सुमित्रानंदन पंत की किसी भी कविता का सार लेखन।

उद्देश्य :

- काव्य विधा के प्रति अभिरुचि जगाना।
- भावुकता व संवेदनशीलता का विकास।
- कविता की समझ विकसित करना।
- सार लेखन समझना तथा सीखना।
- लेखन कौशल का विकास।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम अध्यापक स्वयं सुमित्रानंदन पंत की किसी अन्य रचना का आदर्श पाठ करें तथा कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित कराएं।
3. 3-4 दिन पूर्व ही छात्रों को निर्देश दिया जाए कि वे पुस्तकालय अथवा इंटरनरेट से पंत की अन्य कोई कविता ढूँढ कर लाएं।
4. निर्धारित कालांश में छात्रों से कविता का सार लिखवाया जाए।
5. विद्यार्थियों के काम को संग्रह कर उसका मूल्यांकन कर उन्हें बताएं।
6. मूल्यांकन के आधार बिंदु तथा अंक पूर्व में ही छात्रों को बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु :

- लेखन के आधार पर अंक

टिप्पणी:

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ लेखन करने वाले विद्यार्थी का चयन कर उसकी प्रशंसा करें।
- उपयुक्त कार्य नहीं करने वाले विद्यार्थियों की मदद कर कार्य पूरा करवाएं।